आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:29-11-14

सारी सृष्टि चक्र के ड्रामा में अपने एक बार के पार्ट में ही हमारा बाप, टीचर और सतगुरु बन हमारी पालना, शिक्षा और आत्मा की सद्गति करने वाले, बेहद के बाप-टीचर-सतगुरु ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारी याद बहुत वन्डरफुल है क्योंकि तुम एक साथ ही बाप, टीचर और सतगुरु तीनों को याद करते हो.

बाबा ने हमें बताया है कि इस विश्व रंगमंच पर पार्ट बजाने वाली सर्व आत्माओं में से किसी भी आत्मा को एक ही पार्ट में, बाप, टीचर और सतगुरु ऐसे तीनों रोल नहीं मिल सकते. कोई आत्मा का बाप और टीचर का रोल एक ही पार्ट में हो सकता है लेकिन वह सतगुरु बन नहीं सकता. बाबा ही एक आत्मा है जिसे यह तीनों रोल एक ही पार्ट में संगम पर मिले हुए हैं. बाबा हमारी बाप बनकर पालना भी करता, टीचर बनकर पढ़ाता और सतगुरु बनकर सर्व वरदानों से श्रृंगार कर हमें साथ अपने घर भी ले जाता हैं. इस पूरे ड्रामा में सर्व आत्माओं में से किसी भी एक आत्मा को यह तीनों रोल एक साथ निभाने का पार्ट नहीं मिलता हैं. इसलिए जब हम बाबा को ऐसे कह कर याद करते है कि "बाबा, आप तो हमारे बाप भी हो, टीचर भी हो और सतगुरु भी हो." तो यह याद जरूर बाप तक पहुँचती हैं.

बाबा ने हमें यह भी बताया कि रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान एक बाप की आत्मा में ही हैं. वही स्वयं रचयिता तुम्हें अपना और सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं. तो ऐसे बाप की मुरली एक भी दिन मिस नहीं करनी हैं. बाबा ने कहा है कि जिसका मुरली से प्यार है उसका ही मुरलीधर (शिवबाबा) से भी प्यार हैं.

बाबा को तीनों रुपों से याद करने के लिए बाबा ने आज मुरली में कहे कुछ महा-वाक्यों को फिर से पढ़ेंगे.

- मीठे-मीठे रुहानी सिकीलधे बच्चों से रुहानी बाप पुछते हैं यहाँ तुम बैठे हो, किसकी याद में बैठे हो? बाप, टीचर और सतगुरु की. सभी इन तीनों की याद में बैठे हो? चलते-फिरते याद रहती है? क्योंकि यह है वन्डरफुल बात. सारे कल्प में पार्ट बजाने वाली और कोई भी आत्मा को ऐसे (बाप-टीचर-सतगुरु) नहीं कहा जाता. तुम बच्चे ही बाप को ऐसे याद करते हो.

- अन्दर में आता है यह बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है. सो भी सुप्रीम. भल वह है एक पर बाबा को हम तीनों गुणों से याद करते हैं.

- शिवबाबा हमारा बाप भी है, टीचर और सतगुरु भी है. उनको एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी कहा जाता है. जब यहॉ बैठे है या चलते फिरते भी यह याद रहना चाहिए.

- बाबा पुछते हैं ऐसे याद करते हो कि यह हमारा बाप, टीचर और सतगुरु भी है. ऐसा कोई भी देहधारी नहीं हो सकता, जो तीनों रोल एक साथ निभायें. सभी देहधारीओं में नम्बरवन है श्रीकृष्ण, उनको भी बाप, टीचर और सतगुरु नहीं कह सकते. यह बिल्कुल वन्डरफुल बात है.

- बाबा पुछते है भोजन पर बैठते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद करते हो या तीनों बुद्धि में आते है? और कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कह सकते. यह है विचित्र महिमा विचित्र बाप की.

- बाप ही बैठ अपना परिचय देते है फिर सारे चक्र का भी नॉलेज देते हैं. ऐसे यह युग हैं, इतने-इतने वर्ष के है जो फिरते रहते हैं. यह ज्ञान भी वह रचयिता बाप ही देते है तो उनको याद करने से मदद मिलेगी. बाप, टीचर, सतगुरु वह एक ही हैं. इतनी ऊँच आत्मा और कोई हो नहीं सकती. इस एक आत्मा की तीनों ही सर्विस इकट्ठी हैं इसलिए उनको सुप्रीम कहा जाता है.

- और तो सबका नाम शरीर का ही लिया जाता है. उनकी आत्मा का नाम गाया जाता है. वह आत्मा बाप भी है, टीचर और सतगुरु भी है. उनको ही ज्ञान-सागर कहा जाता है. उनकी आत्मा में ही सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है.

- बाप तो आकर पावन दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको शिवालय कहा जाता है. शिवबाबा शिवालय बनायेंगे ना. यह भी तुम ही जानते हो - वह बाप, बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है.

- जब बाप की याद में बैठते हो तो यह भी याद करना है कि वह बाप टीचर भी है, सतगुरु भी है. नहीं तो पढ़ेंगे कहा से. बाप ने तो बच्चों को सब समझा दिया है. बच्चे ही बाप का शो करेंगे ना. सन शोज फादर.

- बाबा कहते है बहुत मीठे-मीठे बच्चे बनो. शिवबाबा को याद करो. वह हमारा बाप, टीचर और सतगुरु भी हैं.

ॐ शांति.